

શબ્દજ્ઞાન

અર્થ
સફીન-એ-રહે અમલ

મુહિબ્બે મિલ્લત હઝરત મકસૂદઅલી ખાં સાહબ કિબ્લા

ન્યૂ સિદ્દીકિયા એકેડમી-ડભોઇ (ગુજરાત)

शाबान की १५वीं रात मुबारक व मसू'िद रात है. ँस रात की बुजुर्गा व अजमत और सआदत देणीअे, कि ँस रात को-नमाजे मगरिब के बाद, षुदा-अे-तआला का नुजूल समा'दुन्या की तरफ़ होता है. षुदावंद करीम के सामने तमाम बंदों के आमालनामे पेश किअे जाते है. पूरे साल के मरने और पैदा होने वालों की मुकम्मल फेरिस्ते (List)-ँस मुबारक व मसू'िद रात में तैयार की जाती है, और षाने, पीने, ओढने, पहनने वगैरा की तमाम चीजों का-सालभर तक का हिसाब व किताब, ँसी मुबारक रात में होता है. मगरिब से इजर तक इरिस्ते आसमान से जमीन पर आते रहते हैं और अल्लाह पाक की तरफ़ से-ँस तरह बंदो से षिताब करते है कि, “षुदाअे-तआला इरमा रहा है, मेरे बंदो में से है कोँ-मुआझी मांगने वाला बंदा? कि मैं उसके गुनाह बप्श दूं. है कोँ रिजक तलब करने वाला बंदा? कि मैं उस को रिजक अता करूं, और है कोँ मुसीबत जदा बंदा? कि मैं सेहत व आक़ियते मरहमत (रहमो करम की नावा'िश) करूं.” अल्लाह पाक सुब्ह सादिक तक अपने बंदो को ँस तरह षिताब करते रहता है.

हुजूर अकरम (स.अ.व.) ने इरमाया कि, शाबान की १५वीं रात को-जिब्र'िल (अ.स.) मेरे पास आअे और इरमाया कि, “हुजूर! अपना सर मुबारक आसमान की तरफ़ उठाँअे.” हुजूर ने पूछा, “ये कैसी रात है?” जिब्र'िल (अ.स.) ने अर्ज किया कि, “ये वो रात है, जिस में अल्लाह तआला अपनी रहमत के तीन सौ दरवाजे षोलता है. ँसी रात अल्लाह तआला आम तौर पर गुनहगारों की मगफ़िरत इरमाता है” मगर, वो लोग-जो हराम की रोज़ी से अपना

पेट भरते हैं, लोगों पर जुल्म करते हैं या जिन के दिल खुदाई तौछीद से जाली हैं और खुदा के साथ शिक करते हैं-ईस किस्म के लोगों की बज्शिश नहीं की जाती और ईस रात में तकरीबन् तमाम भोमिन मर्द और औरतों की मगफिरत का अलान कर दिया जाता है. मगर, कीना परवर, मां-बाप का नाइरमान, शराब नोशी का आदी, सूदखोर, जिनाकार-ईसी शब (रात) में भी खुदा की बज्शिश से महरूम रहते हैं.

शाबान के मछिने की सबसे बणी खुसुसियत तो यही है कि, रसूले अकरम (स.अ.व.) ईस मछिने में ब-कसरत रोजे रफते थे और शाबान को रमजान से मिला दिया करते थे. सरकारे दो आलम (स.अ.व.) ने इरमाया है कि, 'लोग ईस मछिने की बुजर्गी से नावाकिफ है. ये मछिना रज्जब और रमजान के दरमियान में है. ईस मछिने में लोगों की मौत और रिजक लिफा जाता है. ईसी माह में बंदो के आमाल पेश होते हैं.' ईस तरह १५वीं शब में हुजूर का उम्मत के लिअे ईस्तिगफार करना और जन्नतुल बकी में तशरीफ ले जाना, हजरत आयशा का तलाश करना और हुजूर (स.अ.व.) का ईर्शाद इरमाना कि, 'भुज से जिब्रिल (अ.स.)ने कहा कि, आज की रात सोने की नहीं है. ईस शब में अल्लाह तआला अस्मा-अे-दुन्या पर तशरीफ लाता है और तमाम गुनहगारों को बज्श दिया जाता है. आज की रात अल्लाह तआला कबीला-अे-बनी-अे-कलब की त्मेउ-बकरीयों के बालों की तादाद के मुवाफिक लोगों को दोऊप से आजाद करता है.'

हजरत रसूले मकबूल (स.अ.व.) ईसी शब में ये दुआ

ફરમાતે થે, ‘ઐ ખુદા...! મુઝે તેરે સિવા કોઈ પનાહ દેનેવાલા નહીં હૈ. મੈં જિસ તરહ દૂસરોં કે મુકાબલે મેં તેરી પનાહ તલાશ કરતા હું, ઉસી તરહ તેરી નારાઝગી ઓર તેરે અઝાબ કે મુકાબલે મેં ભી તુઝ સે પનાહ માંગતા હું. ઈલાહી..! મੈં તેરી હી મહેરબાની ઓર તેરી હી મુઆફી કે દામનોં મેં છીપના ચાહતા હું. તેરી ઝાત બહુત બુલંદ ઓર બાલાતર હૈ, તેરી શાન ઓર તેરી તારીફ કા હક અદા નહીં કર સકતા. તૂ અપની તારીફ ખૂદ હી કર સકતા હૈ.’

શબે બરાત મેં અપને પરવરદિગાર કે સામને સર-બ-સુજૂદ હો કર અપને ગલતિયોં, ખતાઓં કી બખ્શિશ કરવા લેં. ગલતિયાં કૌન નહીં કરતા! ઈન્સાન મેં અચ્છાઈ ઓર બુરાઈ-દોનોં કુવ્વતે મોજૂદ હૈં. જિસ કે નતીજે મેં ગલત ઓર સહીહ-દોનોં કિસ્મ કે કામ, આદમી કરતા હૈ. જો કામ શરીઅત કે બતલાએ હુએ રાસ્તે કે ખિલાફ હૈ-હમ ઉસ કો ગુનાહ કહતે હૈ ઓર ગુનાહ બુરી ચીઝ હૈ, ઈસ સે બચના ચાહિએ. લેકિન, અગર ગુનાહ સરઝદ હો જાએ, તો ઉસે ધોને ઓર મિટાને કી ક્યા શકલ હૈ? ઈસ કે લિએ-સબ સે પહલે, ગુનાહ કા અહેસાસ ઝરૂરી છે. અગર ગુનાહ કા અહેસાસ હી મિટ જાએ ઓર આદમી અપને હર કામ કો સહીહ સમઝને લગે, તો ઉસે શર્મ મહેસૂસ હોને લગતી હૈ. ગુનહગાર ઈન્સાન ચાહતા હૈ કિ, અપને ગુનાહ કો કિસી તરહ મિટા દે. ગુનાહ કો મિટાને કી તરકીબ યહી હોતી હૈ કિ ઈન્સાન ખુદા સે મુઆફી ચાહે ઓર દોબારા ઉસ ગુનાહ કો ના કરને કા ઈરાદા કરે, ઈસી કા નામ તૌબા હૈ. જબ ઈસ તરહ સે, ગુનહગાર અપને ગુનાહોં સે તૌબા કર લેતા હૈ, તો ખુદા-એ-તઆલા ઉસકે છોટે-બડે ગુનાહ મુઆફ કર દેતે હૈં. ઐસે શખ્સ કે બારે મેં હુઝૂર (સ.અ.વ.)

ने इरमाया, 'गुनाह से तौबा करने के बाद ईन्सान औसा हो जाता है, जैसे कि वो गुनाह किया ही नहीं।' लेकिन, हुज़ूर (स.अ.व.) ने तौबा करनेवालों के मुताबिक-जो बशारत दी है, वो आसानी से नहीं मिल जाती. आम तौर पर, ये समझा जाता है कि 'अल्लाह! मैं तमाम गुनाहों की मुआफ़ी चाहता हूँ.' कहे लेने से गुनाह धुल जाते हैं, ये गलत है. सिर्फ़ ज़बान से कहे देना काफ़ी नहीं है. जब तक दिल-ज़बान का साथ ना दे, तब तक वोह तौबा, तौबा नहीं होती और दिल उसी वक्त साथ दिया करता है-जब गुनाहों पर शर्मिन्दगी हो.

मगर, ये ज़ाहिर है कि, तौबा में दिल ने साथ दिया है, या नहीं और तौबा दिल से की गई है या ज़बान से? ईस का अंदाज़ा लगाना आसान नहीं. ईस का अंदाज़ा अक़ यीज़ से आसानी के साथ लग जाता है और वो यीज़ है आईन्दा का अमल.

अगर गुनाहगार तौबा के बाद गुनाह से रुक जाये और उसे दोहराता ना रहे, तो ईसका मतलब ये होगा कि, गुनाहगार ने वाकई दिल से तौबा की थी. ईस तौबा में दिल ने उसका साथ दिया था. ईस यीज़ से ये भी अंदाज़ा होता है कि गुनाहगार की तौबा जुदाने कुबूल कर ली है.

कुरआन मजिद में है, 'जो शख्स अपने गुनाह के बाद, तौबा करे और अपने आभाल नेक रभे, तो अल्लाह उस की तौबा कुबूल इरमायेगे.' दिल से तौबा करने के बाद ढेर सा गुनाह भी मुआफ़ हो सकता है. अल्लाह तआला ने इरमाया कि, 'मेरे बंदे ज़मीन व आसमान के बराबर भी गुनाह कर के मेरे पास आये और मग़फ़िरत याहें, तो मैं उन्हें बप्श हुंग्वा और गुनाहों की ज़्यादती की मैं परवाह

ना करूंगा.’

गुनाहों की ज़्यादाती या कमी-असल थीज नहीं है. निदामत और शर्मिन्दगी, अपने किअे पर पछतावा और आर्धन्दा ना करने का पूरा-पूरा धरादा-के साथ, षुदा के डुजूर जाना, अेक अैसा डथियार है- जिस से पिछले गुनाह डुल जाते हैं और गुनाहों के पडाण टुकणे-टुकणे हो सकते है. तौबा की हैसियत उस बाइद की सी है-जे थोणा सा होने के बावजूद, पडाण को अपनी जगह से डिला कर रअ देता है और बणी-बणी यड्डानों को पल लर में रेजा-रेजा कर देता है.

धस मुबारक रात को नादिम और शर्मसार हो कर तौबा करें और साथ में ये ली अडद (धरादा) करें, कि आर्धन्दा नेक और सालेड जिंदगी गुजाइंगा. अगर कोई मुसलमान सिद्धक दिल के साथ-धस रात को परवरदिगारे आलम के डुजूर, आजिजी और धंकसारी से दुआ इरमाअेगा, तो षुदा-अे-तआला उस की दुआ को रद नहीं इरमाअेगा. बलिक, वोड धस तरड पाक हो जाता है-जिस तरड, अली वोड मां के पेट से पैदा हुवा.

डजरत अबुबकर (रजी.) इरमाते हैं कि, “शाबान की १पवीं शब को-अल्लाड तआला आसमान व दुन्या पर, अपनी षास तवज्जे इरमाते हैं. शिक, कीनावर के धलावा सब गुनडगार को बषा देते हैं और ये रात धतनी इजल वाली रात है कि षुदावंद करीम-अंदो को पुकारता है, “ गुनडगार-गुनाह बषावाअें, मुसीबतजदा-मुसीबत को दूर कराअें, बे-रिजक-रिजक मांगें.”

अल्लामा नकी साडब-तइसीर “इडुल बयान” में इरमाते है कि, ‘शबे बरात की रात में अल्लाड पाक जल्ल शाना-तमाम साल का रिजक और

रोज़ी का प्रोग्राम-हज़रत भिकाईल (अ.स.) को, लणाईयो, जलजलों का प्रोग्राम-हज़रत जिब्रईल (अ.स.) को, आमाल व अङ्गुआल का प्रोग्राम-हज़रत ईज़राईल (अ.स.)को सुपुर्द फ़रमाता है.’

हज़रत गौस पाक (रह.) फ़रमाते हैं कि, ‘शाबान की १५वीं रात को सफ़र करने वाले सफ़र के लिअे निकलते हैं और उन का नाम दफ़्तरे हयात से काट दिया जाता है. कई लोग शादी करते है और उन का नाम मौत में लिख दिया जाता है, ईस रात कई कफ़न धुल गअे और कफ़नवाला बाज़ार में बे-भबर फ़िर रहा है. ईसी रात में कई कब्रे षुद गई और कब्रवाला अपने अेश व सरवर में मस्त है.’

हज़ारों दुर्रहो सलाम जातिमुन्नबीय्यिन (स.अ.व.) पर-जिन के इजलो करम से हमें ऐसी मुबारक रात मिली है, जो दूसरे पैगम्बरों की उम्मत को नसीब नहीं हुई. ईस रात की बरकत व सआदत को देपते हुअे हर मुसलमान को ईस रात का अेहतमाम करना याछिअे. हमारे बुजुर्गों के लिअे हर रात शबे मेअराज, कद्र और बरात थी. लेकिन, ईस बीसवीं सदी के मुसलमानों में-वो जजबा, वो डौसला नहीं है, कि सारी रात-ईबादत व जिक में गुज़ारे, या आठ पहर जिक में गुज़ारे. ईसलिअे हर मुसलमान को ईस रात का पास अेहतमाम करना याछिअे और तमाम रात ईबादत व जिक में गुज़ारे. अपने गुनाहों से तौबा करे. नमाज़ो और तिलावते कुरआन से ईस रात को मुनव्वर करे. ना कि ईस इज़ीलत वाली रात को बाज़ारों में घुमते हुअे-डोटल में बैठकर, आतिशबाज़ी में गुज़ार दे.

अगर, किसी मकाम पर करफ़्यू का हुकम हो जाता है, तो सब मिलकर ईस हुकम पर अमल करते हैं और करफ़्यू के औकात में बाहर

जाने का इरादा भी नहीं करते. लेकिन, शबे बरात की रात परवरद्विगारे आलम ने-जो करइयु मुसलमानों पर जारी किया है, इस रात में सिर्फ अल्लाह की इबादत करे, तो (फिर भी) हम इस हुकूम पर अमल नहीं करते. कितने अइसोस का मकाम छे! अगर सब कुछ जानते हुअे भी कोई मुसलमान इन रातों पर तवज्जो ना दे और इस रात को पाओ और इबादत ना करे और अपनी दुन्या व आइयत ना संवारे, तो कितना बदनसीब है. पंदरहवीं शाबान की रात तकदीर की रात है, मगफिरत की रात है, तौहीद कायम करने की रात है और हर इन्सान के सीने को शिर्क व अदावत से पाक कर देने की रात है. हर मुसलमान को याहिअे कि इस शब में गुस्ल करे और सुबह रोजे रखने की निश्चय करे. रात को जाग कर-जिस कदर भी हो सके, पहले कजा नमाज पढे, फिर तिलावते कुरआन पाक और जिके गङ्गुरुर्रहीम से अपनी मगफिरत व आइयत की दुआ मांगे और अगर जुदा-अेतआला ने दौलत से नवाजा है, तो कुछ सदका व भैरात भी करे, क्यूं कि इस से साल भर की रोजी में बरकत होती है. जुदा-अेतआला से दुआ है कि “अै मालिक...! हम को इस रात में तेरी इबादत करने की तौफ़ीक अता इरमा.” आमीन...

★★★★★★★★★★★★★★★★★★★★★★★★★★★★★★★★★★★★★★